शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

के अ़ता कर्दा इल्मो हिक्मत भरे महके महके म-दनी फूलों का हसीन तहरीरी गुलदस्ता

Jannatiyon Ki Zabaan (Hindi)

मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त : 6)

जन्नतियों की ज़बान

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

- सब से अफ़्ज़ल ज़बान
- एहसासे कम तरी और उस का इलाज
- चरागां पर ज़रे कसीर ख़र्च करना कैसा ?
- बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ?
- अन्जीर के फ़वाइद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नतियों की ज़बान

येह रिसाला (**जन्नतियों की ज़बान**)

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ **''मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइद व आ'माल और ज़ाहिर व बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

28 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1435 सि.हि.\ 23 सितम्बर 2014 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

जन्नतियों की ज़बान

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (31 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "बेशक जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझे बिशारत दी : जो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़मत भेजता है और जो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर सलाम पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सलामती भेजता है ।"[1]

बेकार गुफ़्त-गू से मेरी जान छूट जाए
हर वक़्त काश ! लब पे दरूदो सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 ..... مُسندِ احمد، ج ۱، ص ۴۰۷، حدیث ۱۶۶۴، دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

अ़र्ज़ : **अल्लाह** मियां कह सकते हैं या नहीं ?

इर्शाद : नहीं कह सकते । **अल्लाह** तआ़ला या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या **अल्लाह** पाक कहें । मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''ज़बाने उर्दू में लफ़्ज़ ''मियां'' के तीन मा'ना हैं । इन में से दो ऐसे हैं जिन से शाने उलूहिय्यत (**अल्लाह** तआ़ला की शान) पाक व मुनज़्ज़ह है और एक का सिद्क़ हो सकता है । तो जब लफ़्ज़ दो ख़बीस मा'नों में और एक अच्छे मा'ना में मुश्तरक ठहरा और शर-अ़ में वारिद नहीं तो ज़ाते बारी (عَزَّوَجَلَّ) पर इस का इ़त्लाक़ मम्नूअ़ होगा । इस के एक मा'ना ''मौला'' है । बेशक मौला **अल्लाह** है, दूसरे मा'ना ''शोहर'', तीसरे मा'ना ''ज़िना का दलाल'' कि ज़ानी और ज़ानिया में मु-तवस्सित़ (दरमियान वाला) हो ।''[1]

जन्नत में बोली जाने वाली ज़बान

अ़र्ज़ : जन्नत में कौन सी ज़बान बोली जाएगी ?

इर्शाद : जन्नत में अ़-रबी ज़बान बोली जाएगी । अ़-रबी ज़बान हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने रफ़ीउ़श्शान मदीना

1 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 174, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

भी है चुनान्चे ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, साहिबे क़ुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : अहले अ़रब से तीन वज्ह से महब्बत करो : (1) मैं अ़-रबी हूं (2) क़ुरआने मजीद अ़रबी में है (3) अहले जन्नत का कलाम अ़-रबी में होगा ।[1]

मरने के बा'द अ़-रबी ज़बान में सुवाल जवाब

अ़र्ज़ : जो अ़-रबी ज़बान नहीं जानता वोह जन्नत में अ़-रबी ज़बान कैसे बोलेगा ?

इर्शाद : मरने के बा'द हर एक को अ़-रबी ज़बान आ जाती है। क़ब्र में मुन्कर नकीर अ़-रबी ज़बान में ही सुवालात करते हैं और मुर्दा उन सुवालात को समझता है और अ़-रबी ज़बान में जवाबात भी देता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हम हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक अन्सारी के जनाज़े में शरीक हुए और उस की क़ब्र तक गए । जब उन्हे लहद में उतारा गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हो गए, हम भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्द गिर्द बैठ गए गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक में एक लकड़ी थी जिस से ज़मीन कुरेद रहे थे ।

مدینہ

1 ...... مُستَدرَک حاکم، ج۵، ص۱۱۷، حدیث۷۰۸۱، دارالمعرفة بيروت

www.dawateislami.net

फिर अपना सरे अक़्दस उठाया और दो या तीन मर्तबा फ़रमाया : अ़ज़ाबे क़ब्र से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो। ह़ज़रते सय्यिदुना हन्नाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (क़ब्र में मय्यित के पास) दो फ़िरिश्ते आते हैं, उसे बिठाते और सुवाल करते हैं : **مَنْ رَّبُّكَ؟** तेरा रब कौन है ? वोह जवाब देता है : **رَبِّیَ اللّٰہُ** मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। फिर वोह पूछते हैं : **مَادِیْنُكَ؟** तेरा दीन क्या है ? वोह जवाब देता है : **دِیْنِیَ الْاِسْلَامُ** मेरा दीन इस्लाम है। फिर वोह उस से पूछते हैं : **مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِیْ بُعِثَ فِیْكُمْ؟** जो हस्ती तुम्हारी त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाई गई वोह कौन हैं ? ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह जवाब देता है : **هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم** वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। फिर फ़िरिश्ते कहते हैं : तुझे इन बातों का कैसे पता चला ? वोह जवाब देता है कि मैं ने किताबुल्लाह पढ़ी, इस पर ईमान लाया और इस की तस्दीक़ की। फिर आस्मान से निदा दी जाती है : **قَدْ صَدَقَ عَبْدِیْ** मेरा बन्दा सच कहता है, इस के लिये जन्नत से एक बिछोना बिछा दो और इसे जन्नती लिबास पहना दो और इस के लिये जन्नत की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दो ताकि इसे जन्नत की हवा और ख़ुश्बू आती रहे और उस के लिये क़ब्र को ता ह़द्दे नज़र कुशादा कर दिया जाता है।

www.dawateislami.net

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काफ़िर की मौत का ज़िक्र किया और फ़रमाया : (क़ब्र में जाने के बा'द) काफ़िर की रूह को उस के जिस्म में लौटाया जाता है उस के पास दो फ़िरिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और उस से कहते हैं : **مَنْ رَّبُّكَ؟** तेरा रब कौन है ? वोह जवाब देता है : **هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِیْ** अफ़्सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर उस से पूछते हैं : **مَادِیْنُكَ؟** या'नी तेरा दीन क्या है ? वोह जवाब देता है : **هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِیْ** अफ़्सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर वोह उस से पूछते हैं : **مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِیْ بُعِثَ فِیْكُمْ؟** जो हस्ती तुम्हारी त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाई गई वोह कौन हैं ? वोह जवाब देता है : **هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِیْ** अफ़्सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर आस्मान से निदा दी जाती है कि येह झूट कहता है, इस के लिये जहन्नम से एक बिस्तर बिछा दो, आग का लिबास पहना दो और जहन्नम की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दो पस उसे जहन्नम की गरमी और बदबू आती रहेगी और उस पर क़ब्र को तंग कर दिया जाएगा ह़त्ता कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी । ह़दीसे जरीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه में येह भी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर उस पर एक अन्धा बहरा फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया जाएगा जिस के पास लोहे का ऐसा गुर्ज़ (हथोड़ा) होता है कि जिस को पहाड़ पर मारा जाए तो वोह मिट्टी हो जाए पस वोह उस के साथ मुर्दे को

www.dawateislami.net

एक ज़र्ब लगाएगा तो उस की आवाज़ जिन्नो इन्स (या'नी जिन्नात और इन्सानों) के इलावा हर एक सुनेगा जिस से (काफ़िर) मुर्दा ख़ाक हो जाएगा फिर उस में दोबारा रूह़ डाली जाएगी।[1] मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'दे मौत हर शख़्स तह़रीर पढ़ सकता है। जहालत इस आ़लम (या'नी दुन्या) में हो सकती है, वहां नहीं। ह़दीसे पाक में है : كَلَامُ اَهْلِ الْجَنَّةِ عَرَبِيٌّ या'नी अहले जन्नत की ज़बान अ़-रबी है।[2] ह़ालां कि बहुत से जन्नती दुन्या में अ़-रबी से ना वाक़िफ़ हैं। इसी त़रह़ हर मुर्दे से अ़-रबी में मलाइका सुवाल करते हैं और वोह अ़-रबी समझ लेता है। रब तआ़ला ने मीसाक़ के दिन अ़-रबी ही में सब से अ़ह्दो पैमान लिया तो क्या मरने के बा'द मय्यित को किसी मद्रसे में अ़-रबी पढ़ाई जाती है ? नहीं बल्कि ख़ुद ब ख़ुद आ जाती है। क़ियामत के दिन सब को नामए आ'माल लिखे हुए ही दिये जाएंगे और जाहिल व आ़लिम सब ही पढ़ेंगे। जिस से मा'लूम होता है कि मरने के बा'द हर शख़्स अ़-रबी समझता है और लिखा हुवा पढ़ लेता है।[3]

---

1 ..... اَبُوْدَاوٗد، ج۴، ص۳۱۶، حدیث ۴۷۵۳، دار احیاء التراث العربی بیروت

2 ..... جامع صغیر، ص۲۰، حدیث ۲۲۵، دار الکتب العلمیۃ بیروت

3 ..... जाअल ह़क़, स. 348, नईमी कुतुब ख़ाना, गुजरात

www.dawateislami.net

सब से अफ़्ज़ल ज़बान

अ़र्ज़ : सब से अफ़्ज़ल ज़बान कौन सी है ?

इर्शाद : तमाम ज़बानों में सब से अफ़्ज़ल अ़-रबी ज़बान है कुरआने पाक भी अ़-रबी ज़बान में नाज़िल हुवा और जन्नतियों की ज़बान भी अ़-रबी होगी चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन मुह़म्मद बिन अ़ली ह़स्कफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : अ़-रबी ज़बान को दूसरी तमाम ज़बानों पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि येह अहले जन्नत की ज़बान होगी पस जिस ने इसे सीखा और दूसरे को सिखाया उसे अज्रो सवाब मिलेगा कि ह़दीसे पाक में है : अहले अ़रब से तीन वज्ह से मह़ब्बत करो : मैं अ़-रबी हूं, कुरआने मजीद अ़-रबी में है और जन्नत में जन्नतियों की ज़बान अ़-रबी होगी ।[1]

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : येह जो कहा गया सिर्फ़ ज़बान के लिह़ाज़ से कहा गया वरना एक मुस्लिम (मुसल्मान) को ख़ुद सोचने की ज़रूरत है कि अ़-रबी ज़बान का जानना मुसल्मानों के लिये कितना ज़रूरी है, कुरआनो ह़दीस और दीन के तमाम उसूल व फ़ुरूअ़ इसी ज़बान में हैं इस ज़बान से ना वाक़िफ़ी

مدینہ

1 ...... دُرِّمختار، ج۹، ص۶۹۱، دارالمعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

कितनी कमी और नुक़्सान की चीज़ है ।[1]

चराग़ां पर ज़रे कसीर ख़र्च करना कैसा ?

अ़र्ज़ : जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर चराग़ां पर ज़रे कसीर ख़र्च किया जाता है, क्या येह इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) नहीं ?

इर्शाद : जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर चराग़ां पर ज़रे कसीर ख़र्च करना हरगिज़ फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं । उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''لَاخَيْرَ فِى الْاِسْرَافِ، وَلَا اِسْرَافَ فِى الْخَيْرِ या'नी इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं ।'' जिस शै से ता'ज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो, हरगिज़ मम्नूअ़ नहीं हो सकती ।[2] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये जो सरमाया ख़र्च किया जाए वोह इसराफ़ नहीं कहलाता, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى नक्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى पारह 8 **सू-रतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 141 ﴿وَلَا تُسْرِفُوْا﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और बे जा न ख़र्चो) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'सियत या'नी ना फ़रमानी में ख़र्च न करो । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : अगर कोहे अबी क़ुबैस सोने का हो और कोई

---

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 653, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

2 ..... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 174

www.dawateislami.net

शख़्स उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में ख़र्च कर दे तो वोह इसराफ़ करने वाला न होगा और एक दिरहम भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'सियत (ना फ़रमानी) में ख़र्च करे तो इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) करने वाला होगा।[1]

इसी त़रह़ तफ़्सीरे नस्फ़ी में पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** की आयत नम्बर 26 ﴿وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और फ़ुज़ूल न उड़ा) के तह़्त है कि किसी शख़्स ने भलाई के कामों में कसीर माल ख़र्च कर दिया तो उस के दोस्त ने उसे कहा : لَاخَيْرَفِي السَّرَفِ या'नी इसराफ़ में कोई भलाई नहीं। तो उस शख़्स ने जवाब दिया : لَاسَرَفَ فِي الْخَيْرِ या'नी भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं।[2]

महफ़िल में हज़ार शम्एं रोशन थीं

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शैख़ अबू अ़ली मुह़म्मद बिन क़ासिम रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي से मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग ने ज़ियाफ़त का एहतिमाम किया और उस में एक हज़ार शम्एं रोशन कीं, एक (ज़ाहिर बीन) शख़्स ने उन से कहा कि आप ने इसराफ़ किया है।

مدینہ

1 .....تفسیرِ کبیر، ج۵، ص۱۶۵، دار احیاء التراث العربی بیروت

2 .....تفسیرِ نسفی، ص۶۲۱، دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

उन बुज़ुर्ग (जो कि रोशन ज़मीर थे उन्हों) ने फ़रमाया : जाओ और हर वोह शम्अ़ जो मैं ने गै़रुल्लाह के लिये रोशन की हो, बुझा दो। उस ने बुझाने की कोशिश की मगर कोई एक शम्अ़ भी न बुझा सका।[1]

हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुहम्मद बिन मुहम्मद हुसैनी जु़बैदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में येह ख़र्च करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब है और औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام भी इसे मह़बूब रखते हैं इन औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के अह़वाल मुख़्तलिफ़ होते हैं और निय्यतें नेक होती हैं।[2]

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इसराफ़ के मा'ना येह हैं कि ना जाइज़ काम में रक़म ख़र्च की जाए या ऐसे काम में रक़म ख़र्च की जाए जिस का मक़्सद सह़ीह़ न हो म-सलन शराब, सिनेमा, गाना वगै़रा ना जाइज़ कामों में ख़र्च करना या अपने रुपै को दरिया में फेंक देना या नोटों को जला देना वगै़रा येह सूरतें इस्राफ़ की हैं। इस का उसूल येह है : ''لَاخَيْرَ فِى الْاِسْرَافِ، وَلَا اِسْرَافَ فِى الْخَيْرِ या'नी इसराफ़ में नेकी नहीं है और नेकी में ख़र्च करना इसराफ़ नहीं है।''

---

1 ...... اِحیاءُ العُلوم، ج ۲، ص ۲۶، دارصادر بیروت

2 ...... اِتحافُ السَّادَۃِ المُتَّقِین، ج ۵، ص ۱۸۵، دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

हमारी समझ में येह बात नहीं आती कि सिर्फ़ रबीउ़ल अव्वल के महीने में चराग़ां करने और झन्डियों के लगाने पर येह लोग ए'तिराज़ क्यूं करते हैं ? शादियों और दीगर तक़रीबात के मवाक़ेअ़ पर जो चराग़ां होता है उस के बारे में कुछ नहीं कहते और अगर इसराफ़ के येही मा'ना हैं कि मुत्लक़न ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च करना इसराफ़ है तो येह मकान बनाना सब इसराफ़ होगा इस लिये कि झुग्गी (झोंपड़ी) में भी रहा जा सकता है, अच्छे और क़ीमती कपड़े बनवाना भी इसराफ़ होता इस लिये कि टाट, खद्दर वग़ैरा से भी सित्र पोशी हो सकती है, अच्छे खानों पर ख़र्च करना भी इसराफ़ होगा मोटे आटे की रोटी को चटनी या सिर्के के साथ खाने से भी पेट भर सकता है, इन सब बातों में जब रुपिया सर्फ़ करना इस लिये इसराफ़ नहीं कि मक़्सदे सहीह़ के लिये सर्फ़ किया जा रहा है अगर्चे ज़रूरत से ज़ियादा है। इसी त़रह़ मीलाद के मौक़अ़ पर सर्फ़ करना इसराफ़ नहीं है कि अ़-ज़-मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इज़्हार करना मक़्सूद है।[1]

जानते हो क्यूं है रोशन आस्मां पर कहकशां
है किया ह़क़ ने चराग़ां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश)

مدینہ

1 .....वक़ारुल फ़तावा, जि. 1, स. 155, बज़्मे वक़ारुद्दीन, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

एह़सासे कम-तरी और इस का इलाज

अ़र्ज़ : एह़सासे कम-तरी किसे कहते हैं ? नीज़ इस का इ़लाज भी तज्वीज़ फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : एह़सासे कम-तरी का मत़लब है अपने आप को दूसरों से कम-तर समझना और ख़ुद ए'तिमादी का न होना । एह़सासे कम-तरी का मरज़ उ़मूमन किसी काम में नाकामी के बाइ़स पैदा होता है या अपने से किसी बरतर की त़रफ़ देखने से, चाहे वोह बर-तरी दीनी हो या दुन्यवी । दीनी व दुन्यवी बर-तरी वालों में से किस की त़रफ़ देखना चाहिये और किस की त़रफ़ नहीं, ह़दीसे पाक में इस की रहनुमाई फ़रमाई गई है, चुनान्चे हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में येह होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने नज़्दीक शाकिर व साबिर लिख देगा । इन में से एक येह है कि वोह दीन के मुआ़-मले (या'नी इ़ल्मो अ़मल) में अपने से बरतर (ऊपर वाले) की त़रफ़ नज़र करे तो उस की पैरवी करे जब कि दूसरी येह है कि दुन्या के मुआ़-मले में अपने से कमतर (नीचे वाले) की त़रफ़ देखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शाकिर व साबिर लिखेगा और जो अपने दीन में अपने से कम-तर को देखे और अपनी दुन्या में अपने से बरतर को देखे तो फ़ौत शुदा दुन्या पर ग़म करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे न शाकिर

www.dawateislami.net

लिखे न साबिर।''[1]

मा'लूम हुवा कि दीनी मुआ़-मलात में अपने से बरतर की त़रफ़ देखना मह़मूद (अच्छा) है और दुन्यवी मुआ़-मलात में अपने से बरतर की त़रफ़ देखना मज़्मूम (बुरा) है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि वोह दीनी मुआ़-मलात में अपने से ऊपर वाले की त़रफ़ देखे और इस की पैरवी करे, उस जैसा बनने की कोशिश करे और दुन्यवी मुआ़-मलात में अपने से नीचे वाले की त़रफ़ देख कर अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और एह़सान को याद कर के शुक्र बजा लाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी मुआ़-मलात म-सलन मालो दौलत और शक्लो सूरत वग़ैरा में एह़सासे कम-तरी का शिकार होने वालों को चाहिये कि वोह ह़दीसे पाक में बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अपने इस मरज़ का इलाज करें चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख़्स को देखे जिसे इस पर माल और सूरत में फ़ज़ीलत ह़ासिल हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाले।''[2]

مدینہ

1 ..... ترمذی، ج۴، ص۲۲۹، حدیث۲۵۲۰، دارالفکر بیروت

2 ..... بخاری، ج۴، ص۲۴۴، حدیث۶۴۹۰، دارالکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ किसी काम में नाकामी के सबब एह़सासे कम-तरी का शिकार होने वालों को चाहिये कि वोह अपना इस त़रह़ ज़ेह़न बनाएं कि अगर उन्हें एक मर्तबा नाकामी का सामना करना पड़ा है तो ज़िन्दगी में कई बार उन्हें काम्याबियां भी तो नसीब हुई हैं। इस के इ़लावा हर वक़्त बा वुज़ू रहने की आ़दत डालिये कि बा वुज़ू रहने से जहां दीगर बे शुमार फ़वाइदो ब-रकात ह़ासिल होते हैं वहीं एह़सासे कम-तरी से भी नजात मिलती है।

सब से पहला रिसाला

अर्ज़ : आप ने अपनी ज़िन्दगी में सब से पहला रिसाला कौन सा तह़रीर फ़रमाया ?

इर्शाद : मैं ने अपनी ज़िन्दगी में सब से पहला रिसाला "तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा" ब सिल्सिलए यौमे रज़ा तह़रीर किया है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1393 सि.हि. को मुझे येह रिसालए मुबा-रका तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल हुई है।

तू ने बात़िल को मिटाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
है ब-दरगाहे ख़ुदा अ़त्त़ार आ़जिज़ की दुआ़
तुझ पे हो रह़मत का साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ?

अ़र्ज़ : बुरे ख़ातिमे से नजात क्यूंकर मुम्किन हो सकती है ?

इर्शाद : बुरे ख़ातिमे से नजात पाने के लिये हर दम गुनाहों से बचना और नेकियों में मश्ग़ूल रहना ज़रूरी है ताकि नेक काम करते हुए अच्छी ह़ालत में मौत आए। ह़दीसे पाक में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِیْم या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।[1] इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी मरते वक़्त जैसा काम होगा वैसा ही अन्जाम होगा लिहाज़ा चाहिये कि बन्दा हर वक़्त ही नेक काम करे कि शायद वोही उस का आख़िरी वक़्त हो।[2] हर एक को हर वक़्त अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करनी चाहिये और बुरे ख़ातिमे से डरते रहना चाहिये क्यूं कि हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है, न मा'लूम हमारा ख़ातिमा कैसा होगा ? ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का फ़रमाने आ़ली है : बुरे ख़ातिमे से अम्न चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, लाज़िमन

مدینہ

1 ..... بخاری، ج۴، ص۲۷۴، حدیث۶۶۰۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 95, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

तुम पर आ़रिफ़ीन जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे ह़त्ता कि इस के सबब तुम्हारा रोना धोना त़वील हो जाए और तुम हमेशा ग़मगीन रहो। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : तुम्हें अच्छे ख़ातिमे की तय्यारी[1] में मश्ग़ूल रहना चाहिये । हमेशा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में लगे रहो, दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी ह़िफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुम्किन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेह्न उस त़रफ़ माइल हो सकता है ।[2]

शैत़ान दोस्तों की शक्ल में

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : स-करात के वक़्त शैत़ान अपने चेलों को मरने वाले के दोस्तों और रिश्तेदारों की

---

1 ..... शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कम वक़्त में आसानी के साथ दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये इस्लामी भाइयों को 72, इस्लामी बहनों को 63, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन को 92, दीनी त़ालिबात को 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों को 40 म-दनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं। रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللهعزوجل इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2 ..... اِحْيَاءُ الْعُلُوم، ج۴، ص۲۱۹-۲۲۱، مُلخّصاً

www.dawateislami.net

शक्लों में ले कर आ पहुंचता है। येह सब कहते हैं : भाई ! हम तुझ से पहले मौत का मज़ा चख चुके हैं, मरने के बा'द जो कुछ होता है उस से हम अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हैं। अब तेरी बारी है, हम तुझे हमदर्दाना मश्वरा देते हैं कि तू यहूदी मज़्हब इख़्तियार कर ले कि येही दीन **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में मक़्बूल है। अगर मरने वाला उन की बात नहीं मानता तो इसी त़रह़ दूसरे अह़बाब के रूप में शयात़ीन आ आ कर कहते हैं : तू नसारा का मज़्हब इख़्तियार कर ले क्यूं कि इसी मज़्हब ने (ह़ज़रते) मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन को मन्सूख़ किया था। यूं ही अइ़ज़्ज़ा व अक़्रिबा (रिश्तेदारों) की शक्लों में जमाअ़तें आ कर मुख़्तलिफ़ बात़िल फ़िक़्रों को क़बूल कर लेने के मश्वरे देती हैं। तो जिस की क़िस्मत में ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होना (या'नी फिर जाना) लिखा होता है वोह उस वक़्त डग-मगा जाता और बात़िल मज़्हब इख़्तियार कर लेता है।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए, नज़्अ़ के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! हम दुआ़ करते हैं ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़्अ़ के वक़्त हमारे पास शयात़ीन न आएं बल्कि रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं।

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

مدینہ

1 ..... اَلدُّرَّةُ الْفَاخِرَة، ص۵۱۱، مُلَخَّصاً، دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हरगिज़ मायूस न हों दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनता रहेगा । जब ज़ेह्न बनेगा तो एह़सास पैदा होगा, रिक़्क़त मिलेगी और दुआ़ के लिये हाथ उठेंगे तो फिर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में यूं अ़र्ज़ करेंगे :

तू ने इस्लाम दिया, तू ने जमाअ़त में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अ़तिय्या तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

ख़ातिमा बिलख़ैर के पांच अवराद

अ़र्ज़ : ईमान पर ख़ातिमे के लिये चन्द अवराद इर्शाद फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : एक शख़्स मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

(1) (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ (**तरजमा :** ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू) अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें ।[1]

(2) सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये । हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम (बात) करने के बा'द फिर **सूरए काफ़िरून** तिलावत कर लीजिये कि ख़ातिमा इसी पर हो, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा ।

(3) तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखिये : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَالَا نَعْلَمُهٗ (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़्फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते)[2]

(4) तफ़्सीरे सावी में है : जो कोई ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का नाम मअ़ कुन्यत व व-लदिय्यत व लक़ब याद रखेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा । आप का नाम मअ़ कुन्यत व व-लदिय्यत

मदीना

1 ......अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची
2 ......अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 17

www.dawateislami.net

व लक़ब इस त़रह़ है : **अबुल अ़ब्बास बल्या बिन मल्कानल ख़िज़्र** ।[1]

(5) بِسۡمِ اللّٰہِ عَلٰی دِیۡنِیۡ ، بِسۡمِ اللّٰہِ عَلٰی نَفۡسِیۡ وَوُلۡدِیۡ وَ اَھۡلِیۡ وَمَالِیۡ (**तरजमा : अल्लाह** तआ़ला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की ह़िफ़ाज़त हो) सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें ।[2] (ग़ुरूबे आफ़्ताब से सुब्ह़े सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है)[3]

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला !
उ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला !
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हु़ज़ूर
ईमान पे उस वक़्त उठाना मौला !

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईमान पर ख़ातिमे के लिये अच्छी सोह़बत अपनाना और बुरी सोह़बत से ख़ुद को बचाना इन्तिहाई ज़रूरी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वालों को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत

مدینہ

1 ...... تفسیر صاوی، ج۴، ص۱۲۰۷، دار الفکر بیروت
2 ......अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 71
3 ......ऐज़न, स. 12, माख़ूज़न

www.dawateislami.net

से मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा नसीब हो जाता है इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा कीजिये :

चुनान्चे बरोज़ इतवार 26 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1420 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 11.7.1999 ब वक़्ते दोपहर पंजाब के मश्हूर शह्र लाला मूसा की एक मसरूफ़ शाहराह पर किसी ट्रालर ने दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى (साकिन मह़ल्ला इस्लाम पूरा लाला मूसा) को बुरी त़रह़ कुचल दिया। यहां तक कि उन के पेट की जानिब के ऊपर और नीचे का ह़िस्सा अलग अलग हो गया। मगर ह़ैरत की बात येह थी कि फिर भी वोह ज़िन्दा थे और ह़ैरत बालाए ह़ैरत येह कि ह़वास इतने बह़ाल थे कि बुलन्द आवाज़ से اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ الله और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله पढ़े जा रहे थे। लाला मूसा के अस्पताल में डॉकटरों के जवाब दे देने पर उन्हें शह्र गुजरात के अ़ज़ीज़ भट्टी अस्पताल ले जाया गया। उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब क़सम बयान है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए त़य्यिबा का विर्द जारी था। येह म-दनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी ह़ैरानो शश्दर थे कि!

www.dawateislami.net

येह ज़िन्दा किस त़रह़ हैं ! और ह़वास इतने बह़ाल कि बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए त़य्यिबा पढ़े जा रहे हैं ! उन का कहना था कि हम ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा बा ह़ौसला और बा कमाल मर्द पहली मर्तबा ही देखा है । कुछ देर बा'द वोह ख़ुश नसीब आ़शिक़े रसूल मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त़्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने बारगाहे मह़बूबे बारी में बसद बे क़रारी इस त़रह़ इस्तिग़ासा किया :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आ भी जाइये ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मदद फ़रमाइये ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये ।

इस के बा'द बा आवाज़े बुलन्द ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ'' पढ़ते हुए सदा के लिये ख़ामोश हो गए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया
अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

येह वाक़िआ़ उन दिनों मुख़्तलिफ़ अख़्बारात ने शाएअ़ किया था । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुह़म्मद

www.dawateislami.net

मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार मुबल्लिग़ थे और ह़ादिसे के एक रोज़ क़ब्ल ही आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले से सफ़र कर के लौटे थे। मर्ह़ूम रोज़ाना सदाए मदीना[1] भी लगाते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ऐसा लगता है मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की ख़िदमते दा'वते इस्लामी रंग लाई और उन्हें आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो गया। जिस को मरते वक़्त कलिमा नसीब हो जाए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का आख़िरत में बेड़ा पार है चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।[2]

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा
लब पर मरते दम कलिमा
जारी हुवा, जन्नत में गया
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

مدینہ

1 ..... दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना "सदाए मदीना लगाना" कहलाता है। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2 ..... ابو داؤد، ج۳، ص۲۵۵، حدیث ۳۱۱۶

www.dawateislami.net

घर पर म-दनी क़ाफ़िला ठहराने की एह़तियातें

अ़र्ज़ : किसी के घर पर म-दनी क़ाफ़िला ठहराने की सूरत में क्या क्या एह़तियातें की जाएं ?

इर्शाद : ह़त्तल इम्कान मस्जिद या जा-ए नमाज़ ही में म-दनी क़ाफ़िला ठहराने की तरकीब की जाए । ब अम्रे मजबूरी किसी के घर में म-दनी क़ाफ़िला ठहराना पड़े तो पर्दे का सख़्त एहतिमाम रहे, घर को किसी त़रह़ का नुक़्सान न हो, साह़िबे ख़ाना से बे जा सुवालात करें न फ़ुज़ूल तब्सिरे करें म-सलन येह कितने का लिया ? क्यूं लिया ? येह यहां क्यूं रखा है ? सफ़ाई क्यूं नहीं वग़ैरा नीज़ घर वालों पर किसी त़रह़ बोझ भी न बनें, अपने खाने पीने का ख़ुद एहतिमाम करें । वोह दें तो भी ह़त्तल इम्कान मह़ब्बत से समझा कर टालने की कोशिश करें । इस त़रह़ एह़तियात़ करेंगे तो साह़िबे ख़ाना पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा और वोह आयिन्दा भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को ख़ुश आ-मदीद (Welcome) कहेगा जब कि बे एह़तियाती की सूरत में उस के बदज़न होने का क़वी अन्देशा है ।

बवासीर के इलाज के लिये इन्जीर के इस्ति'माल का त़रीक़ा

अ़र्ज़ : बवासीर के अस्बाब नीज़ इ़लाज के लिये इन्जीर के इस्ति'माल का त़रीक़ा भी बता दीजिये ।

www.dawateislami.net

इर्शाद : बवासीर के तीन अहम अस्बाब हैं : (1) पुरानी क़ब्ज़ (2) तब्ख़ीरे मे'दा (3) कुर्सी नशीनी इन चीज़ों से दुबुर (पाख़ाने के मक़ाम) के आस पास की अन्दरूनी रगों में ख़ून का ठहराव हो जाता है जिस के सबब वोह रगें फूल कर मस्सों (Piles) की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अन्दर की त़रफ़ रहती हैं : बा'ज़ लोगों की बवासीर ब-यक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों त़रफ़ होती है। जिसे बवासीर हो उसे चाहिये कि वोह इन्जीर का इस्ति'माल करे कि येह बवासीर और जोड़ों के दर्द को ख़त्म करता है।

इन्जीर के इस्ति'माल का त़रीक़ा येह है कि पांच अ़दद इन्जीर के टुकड़े कर के मुनासिब मिक़्दार में दूध के अन्दर पका लीजिये और ठन्डा कर के सोते वक़्त खा लीजिये। येह ख़ूनी बवासीर का मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) इ़लाज है اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा। ता हुसूले शिफ़ा जारी रखिये अगर मुस्तक़िल इस्ति'माल करें तब भी फ़ाएदा ही फ़ाएदा है। इन्जीर की ता'दाद कम ज़ियादा भी कर सकते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : ''हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इन्जीर शरीफ़ से भरा एक थाल पेश किया गया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से तनावुल फ़रमाया और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : खाओ, अगर मैं

कहूं कि जन्नत से कोई फल उतरा तो वोह येही है कि जन्नत का मेवा बिग़ैर गुठली के होगा पस इसे खाओ कि बिला शुबा येह बवासीर को ख़त्म करता है और गन्ठिया (या'नी जोड़ों के दर्द) में मुफ़ीद है।''[1]

ख़ारिश और दर्द वाली बवासीर में इन्जीर खाने का त़रीक़ा

अ़र्ज़ : बवासीर में अगर ख़ून न आता हो मगर ख़ारिश और दर्द होता हो तो इस में इन्जीर किस त़रह़ खाएं ?

इर्शाद : अगर तक्लीफ़ ज़ियादा हो तो शह्द के शरबत (या'नी शह्द मिले पानी) के साथ रोज़ाना सुब्ह़ नहार मुंह पांच अ़दद ख़ुश्क इन्जीर खा लें। मुसल्सल इस त़रीक़े पर अ़मल करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ चार माह से ले कर दस माह के अ़र्से में मस्से ख़ुश्क हो जाएंगे। (येह त़रीक़े इ़लाज ख़ूनी बवासीर के लिये भी मुफ़ीद है) अगर बवासीर में तक्लीफ़ कम और बद हज़्मी ज़ियादा हो तो हर बार खाना खाने से आधा घन्टा क़ब्ल ख़ुश्क इन्जीर तीन अ़दद खाएं। अगर सिर्फ़ पेट में बोझ होता हो तो हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद इन्जीर तनावुल फ़रमा लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

दफ़्ए़ बवासीर का वज़ीफ़ा

अ़र्ज़ : बवासीर दूर करने के लिये कोई वज़ीफ़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

مدینہ

1 .....الطب النبوی لابی نعیم، ج۲، ص۲۸۵، دار ابن حزم بیروت

www.dawateislami.net

इर्शाद : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने ख़ूनी और बादी दोनों क़िस्म की बवासीर से नजात के लिये एक बहुत उ़म्दा अ़मल इर्शाद फ़रमाया है, चुनान्चे जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब का बयान है कि एक साह़िब ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि मुझे बवासीर का बहुत तक्लीफ़ देह मरज़ है। इर्शाद फ़रमाया : हमारे यहां मज्मूअ़ए आ'माल में एक अ़मल लिखा है, उस पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द शिफ़ा होगी। बवासीर ख़ूनी हो या बादी, दोनों के लिये (येह अ़मल) मुफ़ीद है।

हर रोज़ दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े। पहली रक्अ़त में बा'द **अल ह़म्द** शरीफ़, **सूरए** اَلَمْ نَشْرَحْ और दूसरी रक्अ़त में बा'द **अल ह़म्द** शरीफ़, **सूरए फ़ील** पढ़े। बा'द सलाम 70 बार कहे :

اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

या यूं कहे : اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ مِنْ كُلِّ ذَنْبِیْ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِ رَبِّیْ चन्द रोज़ की मुदा-वमत में (या'नी बिग़ैर नाग़ा किये पढ़ने से) मरज़ दफ़्अ़ हो जाएगा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के

مدینہ

1...... ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 103, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रह कर इन के क़ुर्ब में मांगी जाने वाली दुआ़ओं से भी बीमारियां दूर होती और मुरादें बर आती हैं। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से अन्दरूनी अमराज़ से दोचार एक मरीज़ की शिफ़ायाबी की म-दनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मैं एक अ़र्से से बा'ज़ अन्दरूनी अमराज़ का शिकार था मरज़ की शिद्दत का येह आ़लम था कि जब भी सोता आज़्माइश हो जाती। इ़लाज पर कसीर रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हुवा, मैं इस मरज़ से तंग आ चुका था। मैं ने जब सुना कि म-दनी क़ाफ़िलों में दुआ़एं क़बूल होती हैं तो हिम्मत कर के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान मैं ने दुआ़ की और इस की ब-र-कत से मेरा मरज़ ऐसा ख़त्म हुवा कि गोया कभी था ही नहीं!

गर कोई मर्ज़ है तो मेरी अ़र्ज़ है

पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

इन्जीर के फ़वाइद

अ़र्ज़ : बवासीर के इ़लाज के इ़लावा भी क्या इन्जीर के फ़वाइद हैं?

इर्शाद : क्यूं नहीं! नहार मुंह इन्जीर खाने के अ़जीबो ग़रीब फ़वाइद

www.dawateislami.net

हैं। येह आंतों को खोल कर पेट से हवा निकालता है इस के साथ अगर बादाम भी खा लिये जाएं तो पेट की अक्सर बीमारियां दूर हो जाती हैं। तफ़्सीरे अबुस्सऊ़द में पारह 30 **सू-रतुत्तीन** की आयत नम्बर 1 ﴿وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इन्जीर की क़सम और ज़ैतून) के तह़्त है **:** इन्जीर शरीफ़ ख़्वासे जलीला का ह़ामिल है, येह मुबारक फल है जिस में से कोई शै फ़ालतू (या'नी छिल्का और गुठली) नहीं, हलकी और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ा और कसीर मनाफ़ेअ़ वाली दवा है, येह त़बीअ़त में नरमी पैदा करता है, (जमे हुए) बल्ग़म को ह़ल (कर के ख़ारिज) करता है, गुर्दों को साफ़ करता है, मसाने की पथरी को ज़ाइल करता है, बदन को फ़र्बा करता है और तिल्ली और जिगर की बन्दिशों को खोलता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मूसा रज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है **:** इन्जीर मुंह की बदबू को ज़ाइल करता है, बालों को लम्बा करता और फ़ालिज से मह़फ़ूज़ रखता है।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!

صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

❀❀❀❀❀

مدینہ

1 ..... تفسیرِ ابو السعود، ج۵، ص۸۸۳ ملتقطاً، دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

Tip1:Click on any heading, it will send you to the required page.
Tip2:at inner pages, Click on the Name of the book to get back(here) to contents.

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ?	15
अल्लाह मियां कहना कैसा ?	2	शैत़ान दोस्तों की शक्ल में	16
जन्नत में बोली जाने वाली ज़बान	2	ख़ातिमा बिलख़ैर के पांच अवराद	18
मरने के बा'द अ़-रबी ज़बान में सुवाल जवाब	3	घर पर म-दनी क़ाफ़िला ठहराने की एह़तियातें	24
सब से अफ़्ज़ल ज़बान	7	बवासीर के इलाज के लिये इन्जीर के इस्ति'माल का त़रीक़ा	24
चराग़ां पर ज़रे कसीर ख़र्च करना कैसा ?	8	ख़ारिश और दर्द वाली बवासीर में इन्जीर खाने का त़रीक़ा	26
मह़फ़िल में हज़ार शम्एं़ रोशन थीं	9	दफ़्ए़ बवासीर का वज़ीफ़ा	26
एह़सासे कम-तरी और इस का इलाज	12	इन्जीर के फ़वाइद	28
सब से पहला रिसाला	14		

❀❀❀❀❀

एक चुप सो सुख
100

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net